एम0 ए0 शिक्षाशास्त्र

नियमावली एवं पाठ्यक्रम

1) **प्रवेश अर्हता :** ऐसे अभ्यर्थी जो किसी मान्यता प्राप्त विश्यविद्यालय से स्नातक अथवा उसके समकक्ष परीक्षा उर्त्तीण हैं तथा जो स्नातक स्तर पर ऐच्छिक विषय के रूप में शिक्षाशास्त्र विषय पढ़ चुके हैं वे ही एम0 ए0 शिक्षाशास्त्र में प्रवेश के पात्र होंगे। सभी अभ्यर्थी संस्थागत रूप में ही प्रवेश ले सकेंगे।
2) **अवधि :** एम0 ए0 शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्षो की होगी।
3) **पाठ्यक्रम :** एम0 ए0 (पूर्वार्द्ध) शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम में चार सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र होंगे, जिसमें प्रत्येक के लिए अलग–अलग 100 अंक निर्धारित हैं। पंचम प्रश्न पत्र प्रायोगिक कार्य से सम्बन्धित होगा जो 100 अंकों का होगा। इस प्रकार एम0 ए0 (पूवार्द्ध) शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक प्रश्न पत्रों हेतु कुल 500 अंक निर्धारित होंगे। अभ्यर्थी को उर्त्तीण होने के लिए सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक प्रश्न पत्रों में अलग–अलग 40 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा।

क्रमसं॰	प्रश्न पत्र सं॰	प्रश्न पत्र शीर्षक	पूर्णांक
1	प्रथम प्रश्न पत्र	शिक्षा के दार्शनिक आधार	100
2	द्वितीय प्रश्न पत्र	शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार	100
3	तृतीय प्रश्न पत्र	शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार	100
4	चतुर्थ प्रश्न पत्र	शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी	100
5	पंचम प्रश्न पत्र	प्रायोगिक कार्य	100

एम0 ए0 (उत्तरार्द्ध) शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम में कुल चार सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र (दो अनिवार्य तथा दो वैकल्पिक प्रश्न पत्र) होंगे। प्रत्येक के लिए अलग–अलग 100 अंक निर्धारित हैं। समस्त वैकल्पिक तृतीय एवं

चतुर्थ प्रश्न पत्रों (अ,ब,स,द,य एवं र) में से छात्र को किन्ही दो प्रश्न पत्रों का चयन करना होगा। पंचम प्रश्न पत्र प्रायोगिक कार्य का होगा जो 100 अंकों का होगा। इस प्रकार एम0 ए0 (उत्तरार्द्ध) शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम के सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक प्रश्न पत्रों हेतु कुल 500 अंक निर्धारित होंगे।

क्रम सं०	**प्रश्न पत्र सं०**	**प्रश्न पत्र शीर्षक** **अनिवार्य प्रश्न पत्र**	**पूर्णांक**
1	प्रथम प्रश्न पत्र	भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समसामयिक समस्यायें	100
2	द्वितीय प्रश्न पत्र	शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन	100
3	तृतीय एवं चतुर्थ प्रश्न पत्र	**वैकल्पिक प्रश्न पत्र** निम्नलिखित में से कोई दो प्रश्न पत्र चयनित करने होंगे	100+ 100 } 200
	अ	शैक्षिक प्रबंध एवं प्रशासन	
	ब	शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श	
	स	शिक्षण व्यवहार एवं तकनालाजी	
	द	तुलनात्मक शिक्षा	
	य	विशिष्ट बालकों की शिक्षा	
	र	लघु शोध प्रबंध *	
4	पंचम प्रश्न पत्र	प्रायोगिक कार्य एवं मौखिकी (Viva-Voce)	100
		सत्रीय कार्य	
		कम्प्यूटर कार्य	
		रिव्यू आफ बुक्स/शोधलेख	
		पद विश्लेषण	
		मल्टीमीडिया प्रजेन्टेशन	

* यदि कोई विद्यार्थी लघुशोध प्रबन्ध प्रस्तुत करना चाहता है तो वह विभागाध्यक्ष की अनुमति प्राप्त कर किसी विभागीय शिक्षक के निर्देशन में उसे पूर्ण कर प्रस्तुत कर सकता है जिसका अधिकतम अंक 100 होगा तथा यह किसी एक वैकल्पिक

प्रश्न पत्र के स्थान पर होगा। लघु शोध प्रबंध को वैकल्पिक प्रश्न पत्र के रूप में केवल वही विद्यार्थी चुन सकते हैं जिन्होंने एम0 ए0 प्रथम वर्ष में शिक्षाशास्त्र विषय में 55 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त किया हो।

परीक्षा एवं परीक्षा फल की घोषणा– परीक्षा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित तिथि पर होगी तथा उत्तर पुस्तिकाओं, लघु शोध प्रबंध का मूल्यांकन, उत्तीर्णांक, प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी के प्राप्तांक का निर्धारण एवं परीक्षाफल की घोषणा विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर परीक्षा के नियमों के अनुरूप होगा।

लघु शोध प्रबंध– विभागीय समिति द्वारा ऐसे प्रत्येक छात्र को (जिसने वैकल्पिक प्रश्न पत्र के रूप में लघु शोध प्रबंध को चयनित किया है) अध्ययन अवधि के दौरान शोध प्रबंध का शीर्षक आवंटित किया जाएगा जिसके आधार पर अभ्यर्थी शोध आयोजन, विधितंत्र, क्षेत्र तथा अन्य सामान्य तथ्यों को प्रस्तुत करेगा तथा प्रस्तुतीकरण के समय दिये गये सुझावों को सम्मिलित करते हुये अपने लधुशोध प्रबंध को पूर्ण करेगा। लघु शोध प्रबंध लिखित परीक्षा के दो माह के अंदर या विभागाध्यक्ष द्वारा निर्धारित तिथि तक विभाग में जमा किया जा सकता है।

प्रायोगिक एवं मौखिकी परीक्षा– विश्व विद्यालय द्वारा नियुक्त एक वाह्य एवं एक आन्तरिक परीक्षक द्वारा संयुक्त रूप से प्रायोगिक एवं मौखिकी परीक्षा सम्पन्न करायी जायेगी जो विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार प्रत्येक अभ्यर्थी को अंक प्रदान करते हुये अंक पत्र प्रस्तुत करेंगे जिन्हें सम्मिलित करते हुये परीक्षाफल की घोषणा की जायेगी।

प्रवेश संख्या, प्रवेश प्रकिया एवं शुल्क संरचना विश्वविद्यालय द्वारा स्नातकोत्तर (संस्थागत एवं स्ववित्तपोषित) के लिए निर्धारित नियमों के अनुरूप होगी।

एम0 ए0 (प्रथम वर्ष) शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम की संरचना

(M.A.(Previous)Education Course Structure)

क्रमसं॰	प्रश्न पत्र सं॰	प्रश्न पत्र शीर्षक	पूर्णांक
1	प्रथम प्रश्न पत्र	शिक्षा के दार्शनिक आधार	100
2	द्वितीय प्रश्न पत्र	शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार	100
3	तृतीय प्रश्न पत्र	शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार	100
4	चतुर्थ प्रश्न पत्र	शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी	100
5	पंचम प्रश्न पत्र	प्रायोगिक कार्य	100

प्रथम प्रश्न पत्र

शिक्षा के दार्शनिक आधार

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1) दर्शन एवं शिक्षा के मध्य सम्बन्ध एवं शैक्षिक दर्शन के महत्व को समझ सकेंगे।
2) पाश्चात्य दर्शन की विभिन्न शाखाओं के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
3) भारतीय दर्शन की विभिन्न शाखाओं के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
4) पाश्चात्य एवं भारतीय दर्शन के मध्य अन्तर कर सकेंगे तथा इनकी विभिन्न शाखाओं की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 दर्शन का अर्थ एवं प्रकृति, दर्शन का विषय क्षेत्र, पाश्चात्य एवं भारतीय दर्शन का सिंहावलोकन(Retrospect), शिक्षा का तात्पर्य, शिक्षा का विषय क्षेत्र, पश्चिमी एवं भारतीय शिक्षा का सिंहावलोकन, शिक्षा एवं दर्शन में सम्बन्ध।

इकाई–2 शिक्षा दर्शन की आवश्यकता– शिक्षा–दर्शन का उदय, शिक्षा–दर्शन का स्वरूप, शिक्षा–दर्शन का विषय क्षेत्र, शिक्षा–दर्शन के कार्य, शिक्षा–दर्शन और शिक्षक।

इकाई–3 दर्शन का पाश्चात्य सम्प्रदाय– आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद, व्यावहारिकतावाद, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद एवं इनका शैक्षिक निहितार्थ। प्लेटो, जान डीवी एवं बर्टेन्ड रसेल का शिक्षा में योगदान।

इकाई–4 दर्शन का भारतीय सम्प्रदाय– सांख्य, वेदान्त, जैन, बौद्ध तथा इस्लाम दर्शन एवं इनका शैक्षिक निहितार्थ। विवेकानंद, टैगोर, गांधी तथा श्री अरविन्द का शिक्षा विषयक योगदान।

अध्ययन ग्रन्थः

1. बेकर जान एल.:मार्डन फिलासफीज आफ एजुकेशन, टाटा मेग्राहिल, 1980.
2. तनेजा बी. आर.: सोशियों–फिलासफीकल एप्रोच टू एजुकेशन, एटलांटिक

पब्लि, दिल्ली, 1979.

3. इलिच इवानः डी स्कूलिंग सोसायटी, 1973.
4. पाण्डेय,के. पी. प्रस्पेक्टिव इन सोशल फाउन्डेशन आफ एजुकेशन, अमिताभ प्रकाशन, दिल्ली, 1983.
5. पाण्डेय, के. पी.ः नवीन शिक्षा दर्शन, अमिताश प्रकाशन, दिल्ली, 1988.
6. पाण्डेय रामसकलः शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1998.
7. वर्मा रामनाथ, महान शिक्षा दार्शनिकः राधा पब्लिकेशन, दिल्ली.
8. ओड एल.के., शिक्षा के दार्शनिक आधार, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.
9. चतुर्वेदी सीताराम, शिक्षादर्शन, राज्य हिन्दी संस्थान, लखनउ।
10. ओड एल. के., शिक्षा के नूतन आयाम, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।

द्वितीय प्रश्न पत्र

शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1) समाजशास्त्र तथा शिक्षा के सम्बंध को जान सकेंगे।
2) शैक्षिक समाजशास्त्र एवं शिक्षा के समाजशास्त्र के मध्य अन्तर करते हुये समाजशास्त्र की विभिन्न अध्ययन विधियों को जान सकेंगे।
3) शिक्षा की आधुनिक प्रवृतियों को समझ सकेंगे।
4) शिक्षा के अर्थशास्त्र का विश्लेषण कर सकेंगे।

इकाई–1 समाजशास्त्र तथा शिक्षा में सम्बंध, शैक्षिक समाजशास्त्र तथा शिक्षा का समाजशास्त्र– अर्थ, विषयक्षेत्र एवं इसके अध्ययन की विधियाँ, शिक्षा, सामाजिक नियंत्रक के रूप में शिक्षा।

इकाई–2 समाज की प्रकृति, सामाजिक अन्तः क्रियाओं का योगदान, सामाजिक संरचना, शिक्षा तथा समुदाय, शिक्षा तथा धर्म, शिक्षा एवं संस्कृति, शिक्षा तथा राजनीति, शिक्षा तथा लोकतंत्र, आधुनिकीकरण एवं शिक्षा–अर्थ एवं महत्व।

इकाई–3 सामाजीकरण की प्रकृति, बालक का सामाजीकरण, समाजिक परिवर्तन का अर्थ एवं स्वरूप, सामाजिक स्तरीकरण तथा सामाजिक गतिशीलता, भारत में समाजिक परिवर्तन से सम्बन्धित बाधायें–जाति, वर्ग, भाषा, धर्म, क्षेत्रवाद।

इकाई–4 सामाजिक समदृष्टि तथा शैक्षिक अवसरों की समानता से सम्बन्धित शिक्षा, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से वंचित वर्गो की शिक्षा– अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिलाओं और ग्रामीण जनता के विशेष सन्दर्भ में। शिक्षा का अर्थशास्त्र–सम्प्रत्यय एवं विकास, शिक्षा एवं अर्थिक विकास, पूँजी निवेश के रूप मे शिक्षा की अवधारणा।

अध्ययन ग्रन्थः

जायसवाल, सीतारामः शिक्षा का समाजिक आधार, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ

जायसवाल, सीतारामः शैक्षिक समाजशास्त्र, लखनऊ

पाण्डेय, रामशकलः शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1999.

इस्माइलः एजुकेशन इन द इमर्जिग इण्डियन सोसाइटी, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2008

दुर्खीमः द रूल्स आफ सोसियोलाजिकल मेथड्स

वेवर, मैक्सः द मेथडालाजी आफ सोशल साइन्सेज

डेविस, के•ः ह्यूमन सोसाइटी

ब्राउन, एफ•जे•ः एजुकेशनल सोसियोलाजी

कूक एन्ड कूकः अ सोसियोलाजिकल एप्रोच टू एजुकेशन

मैरिल, एफ•ई•ः सोसाइटी एण्ड कल्चर

मैनहीम,कार्ल, एन इंट्रोडक्सन टू सोशियोलॉजी ऑफ एजुकेशन

तृतीय प्रश्न पत्र

शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1) शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ, विषय क्षेत्र, इसकी भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा तथा शिक्षक के लिए उसकी प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।
2) बुद्धि की अवधारणा एवं उसके विभिन्न सिद्धान्तों को जान सकेंगे।
3) व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय एवं उसके विभिन्न सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।
4) अधिगम के विभिन्न सिद्धान्तों के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
5) अभिप्रेरणा एवं समंजन के सम्प्रत्यय एवं उसके शैक्षिक निहितार्थ को समझ सकेंगे।
6) विशिष्ट बालकों की पहचान एवं उनकी शिक्षा व्यवस्था को जान सकेंगे।

इकाई–1 शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विषय क्षेत्र, शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सम्बन्ध, शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन की विधियां, बालक का सामाजिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास, बुद्धि एवं विकास का सम्बन्ध भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि।

इकाई–2 बुद्धि–परिभाषा, सिद्धांत– स्पीयरमैन का द्विखण्ड सिद्धांत, थर्स्टन का बहुकारक सिद्धांत, गिलफर्ड का बुद्धि संरचना प्रतिमान, बुद्धि का मापन, व्यक्तित्व की परिभाषा, सिद्धांत, विशेषक सिद्धांत–आलपोर्ट एवं कैटिल तथा मनोविश्लेषणवादी सिद्धांत– फ्रायड, जुंग एवं एडलर, बुद्धि एवं व्यक्तित्व की अवधारणा– भारतीय दृष्टि।

इकाई–3 अधिगम का अर्थ, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम के सिद्धांत– थार्नडाइक का प्रयत्न एवं भूल का सिद्धांत, पवलाव का शास्त्रीय अनुबन्धन सिद्धांत, स्किनर का क्रियाप्रसूत अनुबन्धन सिद्धांत, कोहलर का सूझ एवं अन्तर्दृष्टि सिद्धांत, हल का प्रणाली बद्ध व्यवहार सिद्धांत, टॉलमैन का संकेत अधिगम सिद्धांत एवं सूचना प्रसंस्करण, गेने

का अधिगम पर दृष्टिकोण, अधिगम अन्तरण और इसके सिद्धांत, अभिप्रेरणाः– सम्प्रत्यय, भारतीय अवधारणाः पुरूषार्थ चतुष्ट्य (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) एवं शैक्षिक निहितार्थ, समंजन – अर्थ प्रकिया एवं शैक्षिक मिहितार्थ।

इकाई–4 विशिष्ट बालक– सृजनात्मक, प्रतिभाशाली, पिछड़े तथा मन्दित बालकों का विशेषताएं एवं इनकी शिक्षा व्यवस्था, समायोजन की प्रकियाएँ मानसिक द्वन्द्व एवं रक्षायुक्तियॉ, मानसिक स्वास्थ्य तथा आरोग्यता।

अध्ययन ग्रन्थः

Kolhberg , L: Philosophy of Moral Development, New York : Harper and Row, 1981

kundu,C.L. : Education Psychology, Starling Publisher, 1983

Gupta S.P.and Gupta, A.: Uchhater Siksha Manovigyan, Sarda Pustak Bhavan, University road, Allahabad, 2004

Tomar, L : Bharatiya Siksha Manovigyan ke Adhar, Vidya Bharti Prakashan, Kurukshetra

Dutt, N.K.: The Psychological Foundation of Education, Dowaba House, Delhi, 1974

Pandey, K.P.: Naveen Siksha Manovigyan, Viswavidyalaya Prakashan, 2007

Pandey,Ram Sakal : Prachin Bharat ke Shiksha Manishi, Sarda Pustak Bhavan, University road, Allahabad, 2002

Pandey, K and Srivastava, S.S. : Siksha Manovigyan:Bhartitya evam Paschatya Drishti, Tata Mcgraw Hill,New Delhi,2007

Sharma ,R and Sharma, R.:Bhartitya Manovigyan, Atlantic Publisher and Distributers, New Delhi, 1962.

Hurlock, E.: Psychological Development – A life span approach, Mcgraw Hill, 5th ed. 1983.

Hilgard and Bower : Theories of Learning, Tata Mcgraw Hill,New Delhi, 1982

Hull, Kelvin,S, Lindzey and Campbell : Theories of Personality, IVth ed., Jane Villy and Sons,New York, 1992

चर्तुथ प्रश्न पत्र

शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1) शैक्षिक अनुसंधान का अर्थ एवं उसके क्षेत्र को जान सकेंगे।
2) अनुसंधान के विविध प्रकारों (मौलिक, व्यवहृत एवं क्रियात्मक) में अन्तर कर सकेंगे।
3) शैक्षिक अनुसंधान की विधियों को जान सकेंगे।
4) शैक्षिक अनुसंधान की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
5) शैक्षिक शोध से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणो का प्रयोग कर सकेंगे।
6) आकड़ो के विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर सकेंगे।

इकाई–1 शैक्षिक अनुसंधान का अर्थ एवं उद्देश्य, अनुसंधान के प्रकारः मूलभूत, व्यवहृत एवं क्रियात्मक अनुसंधान– तीनों का उद्देश्य, समस्या की प्रकृति, विधि एवं शोध परिणामों के उपयोग की दृष्टि से अन्तर, शैक्षिक अनुसंधान की विधियां– ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, सर्वेक्षण, प्रयोगात्मक, कार्योत्तर एवं व्यष्टि अध्ययन की प्रणाली, गुणात्मक शोध–अर्थ, प्रकार एवं विधि, शोध समस्या की स्थापना– समस्या का चयन, परिभाषीकरण एवं सीमांकन।

इकाई–2 परिकल्पना निर्माण – प्रकिया, स्त्रोत एवं अच्छी परिकल्पना की विशेषताएं, परिकल्पना परीक्षण, सामान्यीकरण एवं निष्कर्ष निरूपण, शैक्षिक शोध में समग्र एवं प्रतिदर्श, –प्रतिदर्श चयन की सम्भाव्यता एवं असम्भाव्यता पर आधारित विधियां, अच्छे प्रतिदर्श की विशेषतायें, आधार सामग्री के संकलन हेतु प्रयुक्त शोध उपकरण–शोध उपकरण की विशेषताएं, उनकी प्रयोग विधि– प्रश्नावली, साक्षात्कार, प्रेक्षण, क्रम निर्धारण मापनी (रेटिंग स्केल), समाजमिति।

इकाई–3 .

- केन्द्रवर्तीमान–मध्यमान, मध्यांक एवं बहुलांक– गणना विधि एवं प्रयोग।
- विचलन मान– मध्यमान विचलन एवं प्रामाणिक विचलन, चतुर्थांश विचलन गणना विधि एवं प्रयोग।

- सहसम्बन्ध गुणांक– स्पीयरमैन, कार्लपियर्सन विधि द्वारा सहसम्बन्ध ज्ञात करना तथा परिणामों की व्याख्या।
- प्रदत्तो का रेखाचित्रीय प्रदर्शन– स्तम्भाकृति, आवृत्ति बहुभुज, संचयी आवृत्ति प्रतिशत वक्र, पाई आरेख।
- सामान्य सम्भाव्यता वक्र की विशेषतायें एवं उपयोग।

इकाई–4 .

- प्राचलिक परीक्षण– टी परीक्षण, एक मार्गीय व द्विमार्गीय प्रसरण विश्लेषण
- अप्राचलिक परीक्षण– काई वर्ग परीक्षण, मेन व्हिटनी यू परीक्षण
- I व II प्रकार की त्रुटि, सार्थकता स्तर

अध्ययन ग्रन्थः

टकमैन ब्रूस डब्ल्यू : कन्डक्टिंग एजुकेशनल रिसर्च, द्वितीय संस्करण, हारकोर्ट ब्रूस 1987.

ट्रेवस एम. डब्ल्यू ;एन इन्ट्रोडक्शन टु एजुकेशनल रिसर्च, तृतीय संस्करण,द मैकमिलन कम्पनी 1989.

वर्मा ए., एन इन्ट्रोडक्शन टु एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्चः एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1981.

कार्लिंगर फ्रेड एन., फाउन्डेशन आफ विहेवियरल रिसर्च– सुरजीत पब्लि., कमला नगर, दिल्ली, 1973.

फर्ग्यूसन जार्ज ए. स्टेटीस्टीकल्स एनेलसिस इन साइकालॉजी एण्ड एजुकेशन : पांचवा संस्करण, मेग्राहिल इन्टरनेशनल बुक कम्पनी, 1981.

डलेन वान, अन्डरस्टैडिंग एजुकेशनल रिसर्च, मेग्राहिल बुक कं0 तृतीय संस्करण 1973.

कोहन लुबिस तथा लारेंस मेनियन, रिसर्च मैथड्स इन एजुकेशन– कूप हेल्प, लन्दन, 1980.

स्टिफेन एम. कोरी. एक्शन रिसर्च टू इम्प्रूव एजुकेशनल प्रैक्टिसेजः रीसर्च कालेज कोलम्बिया, 1053.

पाण्डेय के. पी., फण्डामेण्टल आफ एजुकेशनल रिसर्चः अमिताभ प्रकाशन,1985.

पाण्डेय के. पी., शिक्षा में क्रियात्मक अनुसंधानः अमिताभ प्रकाशन, तृतीय संस्करण, 1988.

पाण्डेय के. पी., मनोविज्ञान और शिक्षा में साख्यिकीः दुजाबा हाउस, तृतीय परिवर्द्धित संस्करण, 1985.

पंचम प्रश्न पत्र

प्रायोगिक कार्य एवं मौखिकी

प्रायोगिक कार्य के अन्तर्गत अधोलिखित 10 प्रयोगों को करना होगा जिनमें से किन्ही दो प्रयोगों को प्रयोगिक परीक्षा में करना होगा।

1) व्यक्तित्व मापन
2) सृजनात्मक परीक्षण
3) आत्म सम्प्रत्यय
4) मूल्य परीक्षण
5) समाजमिति परीक्षण
6) अभिवृत्ति परीक्षण
7) अभिरूचि परीक्षण
8) आकांक्षा स्तर परीक्षण
9) चिन्ता मापनी
10) प्रतिबल मापनी

} 25+25=50

⇒ अभिलेख पंजिका निर्माण } = 50

कुल योग = 100

एम0 ए0 (द्वितीय वर्ष) शिक्षाशास्त्र

पाठ्यक्रम की संरचना

क्रम सं0	प्रश्न पत्र सं0	प्रश्न पत्र शीर्षक अनिवार्य प्रश्न पत्र	पूर्णांक
1	प्रथम प्रश्न पत्र	भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समसामयिक समस्याएँ	100
2	द्वितीय प्रश्न पत्र	शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन	100
3	तृतीय एवं चतुर्थ प्रश्न पत्र	**वैकल्पिक प्रश्न पत्र** निम्नलिखित में से कोई दो प्रश्न पत्र चयनित करने होंगे	100+100 = 200
	अ	शैक्षिक प्रबंध एवं प्रशासन	
	ब	शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श	
	स	शिक्षण व्यवहार एवं तकनालाजी	
	द	तुलनात्मक शिक्षा	
	य	विशिष्ट बालकों की शिक्षा	
	र	लघु शोध प्रबंध •	
4	पंचम प्रश्न पत्र	प्रायोगिक कार्य एवं मौखिकी (Viva-Voce)	100
		सत्रीय कार्य	
		कम्प्यूटर कार्य	
		रिव्यू आफ बुक्स/शोधलेख	
		पद विश्लेषण	
		मल्टीमीडिया प्रजेन्टेशन	

- **नोट–** किसी एक वैकल्पिक प्रश्न पत्र के स्थान पर लघुशोध प्रबन्ध का चयन वही छात्र कर सकते हैं जो स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष में 55 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हों।

प्रथम प्रश्न पत्र

आधुनिक भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समसामयिक समस्याएँ

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1) आधुनिक भारतीय शिक्षा के स्वरूप तथा उसकी विशेषताओं को जान सकेंगे।
2) शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न आयोगों द्वारा समय–समय पर दी गई संस्तुतियों को समझ सकेंगे।
3) प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण हेतु किये गये प्रयासों तथा उसमें आने वाली बाधाओं को जान सकेंगे।
4) राष्ट्रीय एकीकरण तथा राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के योगदान को जान सकेंगे।
5) शिक्षा की नवीन प्रवृत्तियों एवं समसामयिक समस्याओं को जान सकेंगे।

इकाई–1 आधुनिक भारतीय शिक्षा के इतिहास के मुख्य बिन्दुः स्वतंत्रता पूर्वकाल– मैकॉले मिनट्स, वुड डिस्पैच, हण्टर आयोग, भारतीय विश्वविद्यालय आयोग, सार्जेण्ट रिर्पोट, स्वातंत्रोत्तर काल– विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग प्रतिवेदन (राधाकृष्णन 1948–49), माध्यमिक शिक्षा आयोग प्रतिवेदन (मुदालियर 1952–53), भारतीय शिक्षा आयोग प्रतिवेदन (कोठारी 1964–66), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) तथा समीक्षा समिति प्रतिवेदन (अचार्य राममूर्ति 1990)।

इकाई–2 शिक्षा का सर्वभौमीकरण, इसके सम्बंध में किये गए प्रयास एवं बाधाएँ, अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या–कारण एवं सुझाव, शिक्षा का व्यावसायीकरण– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 एवं आचार्य राममूर्ति समिति (1990) समिति की संस्तुतियाँ। व्यवसायीकरण–आवश्यकता एवं इसकी धीमी प्रगति के कारण, मूल्य–अर्थ, मूल्य के क्षरण के कारण, मूल्य संवर्धन हेतु शिक्षा।

इकाई–3 शैक्षिक अवसरों की समानता– विषमताओं के क्षेत्र एवं कारण तथा दूर करने के उपाय, शिक्षा का तीव्र गति से विस्तार– कारक और चुनौतियॉं,

शिक्षा में गुणात्मक सुधार, शिक्षा का राष्ट्रीय एकीकरण एवं राष्ट्रीय विकास में योगदान, शिक्षा का केन्द्रीकरण एवं विकेन्द्रीकरण–विशेषताएँ, लाभ तथा हानि।

इकाई–4 शिक्षा में नवीन प्रवृतियाँ– सतत् शिक्षा, प्रौढ शिक्षा, स्त्री शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, मुक्त विश्वविद्यालय, दूरस्थ शिक्षा एवं पत्राचार शिक्षा, शैक्षिकतंत्र में तकनीकी का समावेश– शैक्षिक प्रसारण, रेडियो एवं टेलीविजन –संचार माध्यम के रूप में, समावेशी शिक्षा व्यवस्था।

अध्ययन ग्रन्थः

दास एम.के.(2008), एजुकेश पॉलिसी इन पोस्ट इंडिपेन्डेन्ट इंडियाः इश्यू एण्ड चैलेन्जेस इन सी0एन0फ0 इयर बुक,2007. इण्डिया एट सिक्सटी, कन्रेम्पोरेरी न्यूज एण्ड फीचर्स एण्ड ऐकेडेमिक एम्सलेन्स, दिल्ली.

जौहरी वी.पी. एवं पाठक पी. डी., भारतीय शिक्षा का इतिहास।

नायक जे.पी. एवं नेरूला, ए स्टूडैन्ट्स हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एजुकेशन।

पाण्डेय के.पी., भारतीय शिक्षा की समस्याएं वर्तमान सन्दर्भ।

पाठक पी.डी. एवं त्यागी, भारतीय शिक्षा की समस्याएँ।

पाण्डेय रामशकल एवं मिश्र ककणा शंकर, भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएँ।

सरयू चौबे प्रसाद, भारतीय शिक्षा समस्याएँ, प्रवृत्तियां और नवाचार।

शर्मा रामनाथः प्राब्लम्स आफ एजुकेशन इन इण्डिया।

श्रीवास्तव जे.पी. एवं ओबराय, आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ

त्यागी गुरूसरनदास एवं तिवारी रमा, भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ।

द्वितीय प्रश्न पत्र

शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1) शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन में भेद कर सकेंगे।
2) मूल्यांकन एवं उसके महत्वपूर्ण बिन्दुओं–शैक्षिक उद्देश्य, अधिगम अनुभव और व्यवहार परिवर्तन का अर्थ समझ सकेंगे।
3) एक अच्छे परीक्षण की विशेषताओं तथा निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षणो के गुण दोषों से अवगत हो सकेंगे।
4) वस्तुनिष्ठ परीक्षण निर्माण की प्रक्रिया को जान सकेंगे।
5) परीक्षणों की विश्वसनीयता, वैधता तथा मानक निर्धारण की विधियों को समझ सकेंगे।

इकाई–1 शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन–संकल्पना, आवश्यकता तथा महत्व, मापन तथा मूल्यांकन में भेद, शैक्षिक उद्देश्यों का वर्गीकरण, मानक सन्दर्भित एवं निकष सन्दर्भित परीक्षण–अभिप्राय एवं विशेषताएँ, संरचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन अभिप्राय एवं विशेषताएँ। शैक्षिक मूल्यांकन के विभिन्न प्रतिमान–संक्षिप्त परिचय एवं गुण–दोष।

इकाई–2 एक अच्छे परीक्षण की विशेषताएँ, निबंन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण की विशेषताएँ एवं सीमाएँ, वस्तुनिष्ठ परीक्षण यथा स्केल, प्रश्नावली, अनुसूची, इनवेन्ट्री, वस्तुनिष्ठ परीक्षण निर्माण विधि एवं प्रमाणीकरणः शिक्षण बिन्दुओं का निर्धारण, पदलेखन, पद विश्लेषण, विभेदीकरणमान एवं काठिन्य स्तर निर्धारण।

इकाई–3 परीक्षणों की विश्वसनीयता एवं वैधता निरूपण, मानक निर्धारण, लिकर्ट तथा थर्स्टन प्रकार की अभिवृत्ति मापनी का निर्माण, बुद्धि, व्यक्तित्व, अभिक्षमता, अभिरूचि एवं सृजनात्मकता के मापन संबन्धी परीक्षणों का विश्लेषण।

इकाई–4 मापन एवं मूल्यांकन में नवीन प्रवृत्तियाँ– परीक्षा सुधार, ग्रेडिग पद्धति, सतत आन्तरिक मूल्यांकन, सेमेस्टर पद्धति, प्रश्न/क्वेश्चन बैंक, परीक्षा एवं मूल्यांकन में कम्प्यूटर का प्रयोग, टी–प्राप्तांक, सी–प्राप्तांक, जेड–प्राप्तांक–सामान्य परिचय।

अध्ययन ग्रन्थः

शर्मा, आर. ए., मापन एवं मूल्यांकन, लायल बुक डिपो, मेरठ।

स्टीफेन एम. कोरी., एक्शन रिसर्च टू इम्प्रूव स्कूल प्रैक्टिसेज ब्यूरो आफ पब्लिकेशन्स, टीचर्स कालेज कोलम्बिया, न्यूयार्क ।

एनस्टासी ए. साइक्लाजिकल टेस्टिंग, न्यूयार्क, द मैकमिलन कं0

ग्रोनलुन्ड, एन.इ., मीजरमेंट एण्ड इवेलुएशन इन टीचिंग, न्यूयार्कः द मैकमिलन कं0

गिलफोर्ड जे0पी0 साइकोमेट्रिक मेथड्स, न्यूयार्क, मेग्रो हिल बुक कं0

फ्रीमैन, एफ. एस., थ्यूरी एण्ड प्रैक्टिस आफ साइक्लाजिकल टेस्टिंग, न्यू देलही, आक्सफोर्ड एण्ड एफ बी एच. पब्लिशिग कं0

गेरेट एच. इ., स्टेटिस्टिक इन साइक्लाजी एण्ड एजुकेशन, बाम्बे बकिल्स, फेफर एण्ड साइमन्स प्रा. लि.।

इबल आर. एल., मीजरिंग एजुकेशनल एचीवमेन्ट इन्डिविजुवल क्लीफूस, एन. जें. प्रेन्टिस हाल इन्फ.

ब्लूम बी एस, : टैक्सोनामी आफ एजुकेशनल आब्जेक्टिव हैण्डबुक–1 कागनेटिव डोमेन्स, न्यूयार्कः डेविड मे के कं0

तृतीय एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र

अ–शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

6) शिक्षा में प्रबन्धन के विभिन्न उपागमों के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
7) शैक्षिक प्रबन्ध के कार्यो को समझ सकेंगे।
8) विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण के सम्प्रत्यय की व्याख्या कर सकेंगे ।
9) शैक्षिक वित्त एवं वित्तीय प्रशासन की अवधारणा को समझ सकेंगें ।
10) शैक्षिक प्रशासन की संरचना के विभिन्न स्तरों के मध्य अतंर कर सकेंगे ।
11) शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन के क्षेत्र में किये जा रहे शोधों की समीक्षा कर सकेंगे।

इकाई–1 शिक्षा में प्रबन्ध एवं प्रशासन के सिद्वान्तों का विकास ;थ्योरी ऑफ टेलरिज्म,प्रशासन प्रक्रिया के रूप में तथा ब्यूरोकेसी के रूप में संगठन , प्रबन्ध एवं प्रशासन की अवधारणा एवं उसमें परस्पर सम्बन्ध ;शिक्षा में प्रबन्ध के विभिन्न उपागम।

प्रबन्धन एवं प्रशासन के मुख्य कार्य एवं प्रक्रियाएँ : नियोजन, संगठन ,नेतृत्व, नियत्रण, मूल्यांकन।

इकाई–2 शैक्षिक प्रबन्धक की भूमिकाएँ एवं कार्य : शैक्षिक नेतृत्व, संगठनात्मक सीमाएं, नेतृत्व एवं प्रशासन, नेतृत्व शैली : मानवीय गुणों के उद्देश्यपूर्ण विकास हेतु अधिगम एवं अनुदेशन ।

पर्यावरण एवं विद्यालय : संगठनात्मक वातावरण– संप्रत्यय एवं मापन ।

इकाई–3 केन्द्रीय एवं राज्य स्तर पर शैक्षिक प्रशासन संरचना ; उच्च शिक्षा में शैक्षिक प्रशासन के मुद्दे एवं समस्याएँ ।

शैक्षिक निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण :सम्प्रत्यय, क्षेत्र, सिद्वान्त एवं समस्याएँ ।

इकाई–4 भारत में शैक्षिक वित्त एवं वित्तीय प्रशासन की अवधारणा का विकासः संक्षिप्त परिचय , बजट एवं उसके प्रकार।

शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन के क्षेत्र में किये जा रहे शोध।

अध्ययन ग्रन्थः

ओड एल.के.,(1992), शैक्षिक प्रशासन, जयपुर,राजस्थान ग्रंथ अकादमी ।

भठनागर,आर.पी. एवं अग्रवाल, विद्या (1986), एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन :नई दिल्ली, इंटरनेशनल प0 हाउस

भट्ट, बी.डी. एवं शर्मा, एस.डी (1992), एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन : हैदराबाद, कनिष्क प0 हाउस बुक लिंक कारपोरेशन

चतुर्वेदी, आर.एन. (1989),दि एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ हायर एजुकेशन इन इंडिया जयपुर, प्रिंटवेल प0

गोयल, एस. एल. (2005), मैनेजमेन्ट इन एजुकेशन, नई दिल्ली, ए.पी.एच. प0 कारपोरेशन

गुप्ता, एल,डी (1987), एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन, आक्सफोर्ड एवं आइ.बी.एच.,

माथुर, एस.एस., एजुकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन–प्रिंसिपल्स एण्ड प्रैक्टिसेस,

राय चौधरी, नमिता (1992), मैनेजमेन्ट इन एजुकेशन, नई दिल्ली, ए0पी0 एच0प0

तृतीय एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र

ब–शिक्षा में निर्देशन तथा परामर्श

उद्देश्य इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

अपने दैनिक जीवन में निर्देशन के महत्व एवं उपयोग को समझ सकेंगे ।

निर्देशन के सिद्धान्त, अन्तर्निहित मान्यताएँ, आधुनिक प्रवृत्तियाँ एवं समस्याओं को जान सकेंगे।

निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न प्रकारों को समझ सकेंगे।

निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न तकनीकी उपागमों का समस्या समाधान में प्रयोग कर सकेंगे।

निर्देशन में विभिन्न मूल्यांकनो एवं प्रविधियों का प्रयोग कर सकेंगे।

निर्देशन तथा परामर्श के विभिन्न उपकरणों एवं प्रविधियों को समझ सकेंगे।

इकाई 1 निर्देशन –अर्थ , आवश्यकता, क्षेत्र, सिद्धान्त ,मान्यताएँ ,प्रकृति एवं आधुनिक प्रवृत्तियाँ।

भारत में निर्देशन आन्दोलन का इतिहास, विभिन्न शिक्षा आयोगों में निर्देशन से सम्बन्धित संस्तुतियाँ।

भारतीय सन्दर्भ में निर्देशन की वर्तमान स्थिति व समस्याएँ।

इकाई 2 निर्देशन के प्रकार– शैक्षिक, व्यावसायिक, व्यक्तिगत– उद्देश्य, अन्तर एवं प्रयुक्त प्रविधियाँ, निर्देशन का प्रारूप–वैयक्तिक एवं सामूहिक।

विद्यालयों में निर्देशन कार्यक्रमों का संगठन एवं प्रशासन ।

व्यावसायिक सूचना – स्त्रोत, संग्रहण तथा प्रसारण।

इकाई 3 . –शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर निर्देशन सेवाएँ

– निर्देशन सेवाओं के प्रकार

1. सूचना सेवा
2. व्यक्तिगत–सूचना संग्रह
3. व्यावसायिक सूचनाः स्रोत संग्रह व प्रसारण
4. परामर्श सेवा
5. स्थापन सेवा
6. अनुवर्तन सेवा
7. शोध सेवाएँ
8. उपक्रम सेवा

इकाई 4अ. परामर्शः अर्थ, सिद्धान्त, सोपान एवं प्रविधियॉ परामर्श की प्रक्रिया तथा अच्छे परामर्शक की विशेषतायें, परामर्श के प्रकार–निदेशात्मक, अनिदेशात्मक तथा संकलनात्मक परामर्श–अर्थ, प्रक्रिया, अंतर।

ब निर्देशन की विधियाँ एवं उपकरण, निर्देशन में मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मूल्यांकन।

निर्देशन कार्यक्रम का मूल्यांकन– मूल्यांकन की विभिन्न प्रविधियाँ एवं उपयोगिता।

Reference books :

Kochhar,S.K.(2006): Guidance and counselling in colleges and Universities :Sterling Publication, New Delhi.

Dinkmayer Don(1970): Developmental Guidance and counselling :A Comprehensive School Approach.

Rao,S.N.(2005): Guidance and counseling, Sterling Publication, New Delhi.

Traxlar ,A.E and R.I.North(1957): Techniques of Guidance and counselling, N.York,Harper & Raw,3-4

Crow L,and ,Crow D.(1951): An Introduction to Guidance Principles and practices.
Downing,Lester,N.(1964): Guidance and counselling services.N.York, McGraw Hill.

Pandey,K.P.((2000): Educational and Vocational Guidance in India.Vishwavidyalaya Prakashan,Varanasi.

Gupta, Manju(2003): Elective Guidance and counseling :Modern methods and techniques.Mangal Deep pub.,Jaipur.

Pandey, K.P. evam Bhardwaj ,A.((2005):Shaikshik evam Vyavsayok Nirdeshan. Vishwavidyalaya Prakashan,Varanasi.

Oberoi,S.C.(2001): Shaikshik evam Vyavsayok Nirdeshan taha Paramarsh.Layal Book Depot,Meerut

Jaiswal,Sitaram.(2000): Shiksha mein Nirdeshan tatha Paramarsh.Vinod Pustak Mandir,Agra

Verma,R.S.EvamUpadhyaya(1996): Shaikshik evam Vyavsayok Nirdeshan. Vinod Pustak Mandir,Agra

Tripathi,S and Deb, R (2007): Nirdeshan evam Paramarsh, Aditya Book Centre,Varanasi.

तृतीय एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र

स–शिक्षण व्यवहार की तकनालॉजी

उद्देश्य– इस प्रश्न पत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1) शैक्षिक तकनालॉजी का अर्थ एवं समकालीन प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।
2) शैक्षिक तकनालॉजी के विभिन्न प्रकारों का अर्थ समझ सकेंगे।
3) शिक्षण अधिगम सम्बन्ध की व्याख्या कर सकेंगे।
4) अधिगम के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कर सकेंगे।
5) अभिक्रमिक अनुदेश की अवधारणा एवं प्रकारता से परिचित हो सकेंगे।
6) शिक्षण में कम्प्यूटर सहअनुदेशन तथा सूचना प्रद्यौगिकी के योगदान से अवगत हो सकेंगे।

इकाई–1 तकनालॉजी– तात्पर्य, क्षेत्र, विकास एवं समकालीन प्रवृत्तियाँ, तकनालॉजी के प्रकार, व्यवहार तकनालॉजी,

अनुदेशन तकनालॉजी, शिक्षण तकनालॉजी, अनुदेशनात्मक रूपरेखा– प्रकृति एवं विषय क्षेत्र ।

शिक्षण अधिगम सम्बन्धः शिक्षण की प्रकारता, शिक्षण की अवस्थाएँ एवं उनकी संक्रियाएँ।

शिक्षण अधिगम के स्तरः स्मृति स्तर, अवबोध स्तर, विमर्शी स्तर– स्वरूप अन्तर्निहित सिद्धान्त, शिक्षण एवं परीक्षण विधि ।

इकाई–2 अधिगम के विभिन्न प्रकार– कौशल, वाचिक, ज्ञान, सम्प्रत्यय, नियम एवं समस्या समाधन अधिगम के शिक्षण में निहित सोपान।

शिक्षण के प्रतिमान– सम्प्रत्यय, आवश्यकता एवं आवश्यक तत्व, शिक्षण के

प्रतिमानों का वर्गीकरण, शिक्षण के कुछ चुने हुए प्रतिमान– आधारभूत शिक्षण प्रतिमान, विद्यालय अधिगम प्रतिमान, सम्प्रत्यय सम्प्राप्ति प्रतिमान तथा मनोवैज्ञानिक प्रतिमान– अवयव, विशेषताएँ शिक्षक के लिए निहितार्थ ।

इकाई–3 शिक्षण व्यवहार की धारणा, विशेषताएँ, एवं स्वरूप, कक्षा व्यवहार के क्रमिक स्वरूप, आब्यूह रचना एवं युक्तियाँ।

शिक्षण व्यवहार के आशोधन की विधियाँ– सूक्ष्म शिक्षण, अनुरूपित शिक्षण,– सम्प्रत्यय एवं अनुप्रयोग।

शिक्षण का व्यवस्थित प्रेक्षण– फ्लैण्डर्स अनुक्रिया विश्लेषण, श्रेणियॉ पारस्परिक अनुवर्ग विधि एवं समकक्ष वार्ता श्रेणियाँ ।

इकाई–4 सम्प्रेषण एवं शिक्षण सम्प्रेषण की संरचना– सिद्धान्त, प्रकार एवं प्रक्रिया, सम्प्रेषण एवं माध्यम– माध्यमों का वर्गीकरण, बहुमाध्यम उपागम, नेटवर्किंग अभिक्रमित अनुदेशन– उत्पत्ति, अवधारणा एवं प्रकारता– रेखीय, शाखीय एवं श्रृंखलित, अभिक्रम का निर्माण, अभिक्रम का लेखन एवं मूल्यांकन, शिक्षण में कम्प्यूटर सहअनुदेशन तथा सूचना प्रद्यौगिकी का योगदान।

अध्ययन ग्रन्थः

पासी वी. के., विकमिग वेटर टीचर, ए माइक्रो टीचिंग एप्रोच साहित्य, मुद्रण, अहमदाबाद, 1975.

सिंह त्रिभुवन एवं सिंह प्रभाकर, शिक्षण अभ्यास के सोपान, भारत भारती प्रकाशन, जौनपुर 1984.

सिंह एल.सी. एवं शर्मा आर. डी., माइक्रो टीचिंग, थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस नेशनल साइकोलाजिकल कारपोरेशन, आगरा, 1991.

ब्राउडी एल. माडल्स आफ टीचिंग, प्रेन्टिस हाल आफॅ आस्ट्रेलिया, आस्ट्रेलिया,1972

जायस ब्रूश एवं वील मार्शाः माडल्स आफ टीचिंग, सोसाइटी फार एजुकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट, बड़ौदा 1991.

डिसीको जॉन पीः एजुकेशनल टेक्नालॉजीः रीडिंग इन प्रोग्राम्ड इन्स्ट्रक्शन, लन्दन, हाल रिनेहार्ट एण्ड विन्स्टोन, 1988.

सम्पत के. तथा अन्य, इन्सट्रक्शन टू एजुकेशनल टेक्नालॉजी, नयी दिल्ली, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, 1988.

अग्रवाल जे.सी. एसेन्शियल्स आफ एजुकेशनल टेक्नालॉजीः टीचिंग लर्निंग एनोवेशन इन एजुकेशन, विकास पब्लिशिंग, प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली.

दास आर. सी.: एजुकेशनल टेक्नालॉजी, वेसिक टेक्स्ट.

पाण्डेय के.पी.: मार्डन कान्सेप्ट फार टीचिंग विहेवियर, अनामिका पब्लिशर प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, 1997.

पाण्डेय सरला एवं उपाध्याय आर., शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001.

पाण्डेय के.पी. शिक्षण अधिगम की तकनालॉजी, अमिताश प्रकाशन, मेरठ, 1988

स्किनर बी. एफ. दी टेक्नालॉजी आफ टीचिंग, मेरेडिथ कारपोरेशन न्यूयार्क, 1968.

तृतीय एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र

द–तुलनात्मक शिक्षा

उद्देश्य – इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 विद्यार्थियों में विश्व स्तर पर शिक्षा के क्षेत्रों में हुए परिवर्तनों की जानकारी होगी ।

2 विद्यार्थी विभिन्न देशों की भौगोलिक,राजनीतिक तथा सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिस्थितियों कों समझ सकेंगें

3 विद्यार्थी विकसित राष्ट्रों के विकास के मूल में शिक्षा की अनिवार्यता को समझ सकेंगें

4 विद्यार्थी विकासशील एवं विकसित राष्ट्रों की विभिन्न शैक्षिक समस्याओं कों परिचित हो सकेंगें

5 विद्यार्थी विभिन्न देशों कें शिक्षा व्यवस्थाओं का समीक्षात्मक अध्ययन कर अपने कौशल एवं चिंतन में परिवर्तन कर सकेंगे

6 विद्यार्थी ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस तथा भारत के शैक्षिक परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे

इकाई–1 तुलनात्मक शिक्षा का अर्थ क्षेत्र विकास उद्देश्य, एवं अध्ययन विधियां, वर्णनात्मक, सामाजिक संस्कृति, वैज्ञानिक एवं सांख्यिकीय तुलनात्मक शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक।

राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के विकास में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का योगदान

इकाई–2 भारत, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस में प्राथमिक शिक्षा– उद्देश्य, संगठन तथा पाठ्यक्रम

भारत, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस में माध्यमिक शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा– उद्देश्य, संगठन तथा पाठ्यक्रम

इकाई–3 भारत, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस में उच्च शिक्षा विशेष रूप से वृत्तिक तथा शिक्षक शिक्षा के उद्देश्य, संगठन तथा पाठ्यक्रम के संबंध में।

इकाई–4 भारत, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस में दूरवर्ती एवं सतत् शिक्षा

भारत, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस में शैक्षिक स्वायत्तता ।

अध्ययन ग्रन्थः

केमर तथा काउन नेशनल सिस्टम आफ एजुकेशनल ।

मुखर्जी एन.एन. एजुकेशन इन इण्डियाः टुडे एण्ड टुमारो ।

केन्डल न्यू इरा इन एजुकेशन ।

डेन्ट एच. सी.एजुकेशन इन ग्रेट ब्रिटेन।

एरिक एश. बी यूनिवर्सिटीज, ब्रिटिश, अफ्रीकन एण्ड जापानीज ।

भारतीय शिक्षा आयोग (1964–1966).

पाण्डेय के. पी. तुलनात्मक शिक्षा, (सं0)

न्यू एजुकेशन पालिसी–प्रोग्राम आफ एक्षन (1986).

पाण्डेय के. पी. कम्परेटिव एजुकेशनः (सं0)

तृतीय एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र

विशिष्ट बालकों की शिक्षा

उद्देश्य– इस प्रश्नपत्र के अध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी–

1 विशिष्ट बालक एवं उनके विशिष्ट षिक्षा की आवष्यकता को समझ सकेंगें ।

2 विकलांगों की समस्याओं को समझ सकेंगें ।

3 पूर्ण बधिर एवं मूक बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था हेतु अपने सुझााव दे सकेंगे ।

4 वंचितों की स्थिति एवं वंचन के कारणों का विश्लेषण कर सकेंगे ।

5 भारत एवं विश्व में मानसिक विकलांगता से ग्रस्त बालको के लिए दी जा रही सुविधाओं का मूल्याकंन कर सकेंगे ।

6 विशिष्ट बालकों की शिक्षा हेतु अध्ययन सामग्री का निर्माण कर सकेंगे ।

इकाई 1 विशिष्ट बालक– अर्थ, प्रकार, विशिष्ट शिक्षा की आवश्यकता, उपयोगिता एवं महत्व, भारत में विशिष्ट शिक्षा का संक्षिप्त इतिहास एवं विषयक्षेत्र समावेशी शिक्षा अर्थ एवं विशेषताएँ।

विकलांग बालक– विकलांगता का अर्थ, विकलांगों की समायोजन समस्यायें, भौतिक एवं सामाजिक सुविधायें, विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि एवं विशिष्ट विद्यालय ।

इकाई 2 दृष्टि दोष ग्रस्त अथवा सम्पूर्ण रूप से दृष्टिबिहीन बालकः– दृष्टि दोष का अर्थ, पहचान, समायोजन समस्या, विशिष्ट माध्यम, समाज की मुख्य धारा में इन्हे जोडने के सन्दर्भ में शिक्षण व्यवस्था तथा प्रयास।

पूर्ण बघिर अथवा अर्धबघिर बालकः– बघिर का अर्थ, पहचान, समायोजन, समस्या विशिष्ट शिक्षा–व्यवस्था, पाठ्यक्रम, अलग विद्यालय, शिक्षण विधि,

शिक्षा माध्यम तथा समाज की मुख्य धारा में इन्हें जोडने के सन्दर्भ में शिक्षण व्यवस्था तथा प्रयास ।

इकाई 3. हकलाना या पूर्ण रूप से मूक बालकः– अर्थ, पहचान, समायोजन समस्या, विशिष्ट शिक्षण व्यवस्था, पाठ्यक्रम, अलग विद्यालय, शिक्षण विधि, शिक्षण माध्यम तथा समाज की मुख्य धारा में उन्हें जोडने के सन्दर्भ में शिक्षण व्यवस्था तथा प्रयास।

बंचित बालक एवं उनकी शिक्षाः– वंचित बालक– वंचन का अर्थ, प्रकार, आधुनिक सामाजिक सन्दर्भ में वंचितों की स्थिति (दशा) कारण, बौद्धिक, संवेगात्मक, निष्पत्ति, व्यक्तित्व पर वंचन का प्रभाव, वंचितों को समाज में पुनः स्थापित करने में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका, शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन एवं सुविधा वंचित बालक, कारण, निवारण, विभिन्न मनोवैज्ञानिक विद्यालयों की स्थापना की आवष्यकता, विशिष्ट शिक्षा व्यवस्था ।

इकाई 4 मानसिक न्यूनता– अर्थ, पहचान, मानसिक न्यूनता से ग्रस्त बालकों के प्रकार, शिक्षा प्राप्त करने योग्य मानसिक विकलांग, प्रशिक्षण योग्य मानसिक विकलांग एवं अभिरक्षणीय, संवेगात्मक संतुष्टि के सन्दर्भ में शिक्षा व्यवस्था, उपचारात्मक शिक्षण एवं विशिष्ट पाठ्यक्रम का निर्माण, समाज में इनके पुनर्स्थापन में शिक्षा एवं शिक्षक की भूमिका ।

भारत एवं विश्व में मानसिक विकलांगता से ग्रस्त बालको के लिए दी जाने वाली सुविधायें, मानसिक विकलांगता एवं रोजगारपरक शिक्षा व्यवस्था, विशिष्ट विद्यालय, स्वरूप, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि तथा इन विद्यालयों की भूमिका ।

Reference books

Bill R Gearheart(1988) : Teaching mildly and moderately handicapped students; Prentice Hall of India Ltd.

Bond,G.G.(1997):An Assessment of cognitive abilities in hearing and hearing impaired pre school children. Journal of speech and Hearing disorder,52,319-323.

Byrne ,B.(1993):Learning to read in the absence of phonemic awareness.cognition,48,285-288.

Brown,R.(1991):Cognition and development of language. New York: Wiley.

Chovan,W.L.(1972):Role of vocal labeling in memory for object arrangements by deaf and hearing children. perceptual and motor skills,34,59-62.

Colangelo,N;& Davis, . G.A.(1997):Hand book of gifted education. Needgam Heights, MA: Viacom

Cropley,J,(2000)Defining and measuring creativity: Are creativity test worth using? Roepar review,23,72-79.

Conrad ,R,(1979):The deaf school child. London: Harper and Row.

Davis G.M.& Rimm S.B (1994) :Education opf the gifted and talented. Needgam Heights, MA: imon and chuster.

Eldon E. Ekwall(1986): Diagnosis and Remediation of the disabled reader :Allyn and Bacon.

Francis Schrag()1988: Thinking in school and society: Routledge. New york and London

पंचम प्रश्नपत्र

प्रायोगिक कार्य एवं मौखिकी

मौखिकी	25	अंक

सत्रीय कार्य

1) कम्प्यूटर कार्य	10	अंक
2) रिव्यू आफ बुक्स / शोधलेख	25	अंक
3) पद विश्लेषण	20	अंक
4) मल्टीमीडिया प्रजेन्टेशन	20	अंक
कुल योग =	100	अंक